मुश्किलों का हल है एक
निश्चय करे जो सदा बाप पे एक
एक बल एक भरोसा करके
जीते वो माया के हर खेल

सर्व का मालिक है एक
सिखाए जो प्रेम की भाषा एक
करे न किसी जाति धर्म में भेद
एक मत उसकी ऊँची श्रेष्ठ

अनेक धर्म ख़त्म कर
देवी देवता धर्म की होती
सतयुग में एक राज्य की स्थापना
होते जहाँ सबके विचार भी एक

यथा राजा तथा होती प्रजा भी
होता वहाँ न कोई मतभेद
होते स्वयं में सभी सम्पूर्ण
वजीर करे न कोई जरुरत पूर्ण

संगम पर होती श्रेष्ठ कर्म की खेती
एक का पदम् गुणा फल मिलता
भूल से विकर्म का भी 100 गुना
दंड धर्म राज से सज़ा में मिलता

एक से सर्व संम्बंध जुड़ते
एक ही से सर्व प्राप्ति होती
एक शमा पर होते सब फ़िदा
परवाने बन जीती जी मरते

एक माशूक अनेक सज्जनियां
एक ही टीचर एक ही सतगुरु
एक बाप के सब संतान
करते अपना विश्व में ऊँचा नाम

एक ही ज्ञान सब शास्त्रों
का सार समझाता
गीता के हर शलोक का
 यथार्थ अर्थ बताता

एक है परमात्मा अनेक आत्माए
पिता पुत्र का नाता उनका
पवित्रता है उनका अविनाशी गुण
है दोनों का रूप ज्योतिर्बिंदु

करे जो एक को सदा याद
मिट जाए उसके विषय विकार
एक से मिले सुख शांति अपार

हो जाओ उस एक पर बलिहार

मेरा तो एक शिव बाबा
झूठे सारे देह के रिश्ते बेकार
एक कल्प में आते वो एक ही बार
देते वरसा संगम पर अखुट अपार

ॐ शांति।